इकाई 23 मध्य एवं पूर्वी भारत

इकाई की रूपरेखा

23.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम पूर्वी तथा मध्य भारत में सन् 1300-1500 ई. के बीच के क्षेत्रीय राज्यों का अध्ययन करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- मध्य तथा पूर्वी भारत में क्षेत्रीय राज्यों के उदय के विषय में जान जाएंगे,
- इन राज्यों के क्षेत्रीय प्रसार के विषय में भी आप बता सकेंगे,
- क्षेत्रीय राज्यों के अपने पड़ोसी राज्यों तथा अन्य दूसरे क्षेत्रीय राज्यों के साथ संबंधों के विषय में भी आपको जानकारी प्राप्त होगी, और
- क्षेत्रीय राज्यों के दिल्ली सल्तनत के साथ संबंधों के विषय में भी आपको ज्ञान हो सकेगा।

23.1 प्रस्तावना

आप खंड 5 की इकाई 18 में पहले ही पढ़ चुके हैं कि कमज़ोर होती दिल्ली सल्तनत को क्षेत्रीय राज्यों ने गंभीर खतरा पैदा कर दिया था और उनके उदय के कारण सल्तनत के भौतिक बिखराव की प्रक्रिया का प्रारंभ हो गया। इस इकाई में हमारा अध्ययन मध्य तथा पूर्वी भारत में मालवा, जौनपुर, बंगाल, आसाम तथा उड़ीसा में क्षेत्रीय राज्यों के उदय पर केन्द्रित होगा। हम इन उपरोक्त राज्यों में राजनीतिक प्रणाली की स्थापना और उनके प्रसार तथा विखंडन का अध्ययन करेंगे।

आप देखेंगे कि किस प्रकार से उनका उद्‌भव हुआ और कैसे उन्होंने अपने नेतृत्व को स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। सन् 1300 ई. से 1500 ई. तक की सदियों के दौरान मध्य तथा पूर्वी भारत में दो प्रकार के राज्यों का उदय हुआ। (अ) प्रथम वे राज्य थे जिनका उदय एवं विकास सल्तनत से स्वतंत्र तौर पर हुआ (जैसे कि आसाम एवं उड़ीसा के राज्य), (ब) बंगाल, जौनपुर एवं मालवा जैसे राज्य, जो अपने अस्तित्व के लिए सल्तनत के ऋणी थे। ये सभी राज्य निरंतर एक दूसरे के साथ युद्ध करते रहते थे। इन संघर्षों में कुलीन वर्गों, अमीरों या राजाओं तथा स्थानीय अभिजात वर्गों ने निर्णायक भूमिका अदा की।

23.2 मालवा

सल्तनत के पतन ने मालवा के स्वतंत्र राज्य की स्थापना के मार्ग को प्रशस्त किया। मालवा के तुगलक गवर्नर दिलावर खां ने सन् 1406 ई. में स्वतंत्रता प्राप्त कर ली तथा स्वयं को

मालवा का राजा घोषित कर दिया। उसने निमार, सौयार, दमोह तथा चन्देरी पर अधिकार करके अपने राज्य की सीमाओं का प्रसार किया। दिलावर खां ने अपनी पुत्री का विवाह खानदेश के मलिक राजा फारूकी के बेटे अली शेर खलजी के साथ किया और फारूकी की बेटी का विवाह अपने पुत्र अल्प खां के साथ। इन वैवाहिक संबंधों द्वारा उसे अपने राज्य की दक्षिण-पूर्वी सीमाओं की रक्षा करने में मदद मिली। गुजरात के शासक मुजफ्फर शाह के साथ मित्रतापूर्ण संबंध बनाए रखते हुए उसने सफलतापूर्वक मालवा को आक्रमणों से बचाया। लेकिन शीघ्र ही 1407 ई. में उसकी मृत्यु हो जाने के कारण मालवा गुजरात के शासक मुजफ्फर की साम्राज्यवादी अभिलाषाओं का शिकार हो गया। लेकिन 1408 में होशंग शाह (सन् 1406-35 ई.) ने मालवा की सत्ता पर अधिकार करने में सफलता प्राप्त कर ली (विस्तृत जानकारी के लिए इकाई 24 को देखिए)। उसने शीघ्र ही खेरला तथा गगरौन पर अधिकार कर लिया। उसकी दृष्टि ग्वालियर पर भी लगी थी। लेकिन मुबारक शाह की शक्ति को महसूस करने पर ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ नुकसान पहुँचाने के बाद सन् 1423 में होशंग ने ग्वालियर से अपनी सेनाओं को वापस लौटा लिया। होशंग शाह ने कालपी के मुस्लिम शासक के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किए और उसने कालपी का उपयोग जौनपुर-मालवा तथा दिल्ली-मालवा के बीच मध्यवर्ती राज्य के रूप में किया।

होशंग शाह का उत्तराधिकारी मौहम्मद शाह अयोग्य साबित हुआ। मौहम्मद शाह के संक्षिप्त शासनकाल में मालवा का दरबार आंतरिक षड्यंत्रों का अखाड़ा बन गया और इसके गंभीर परिणाम हुए। इसकी अंतिम परिणति उसकी हत्या (1436 ई.) के रूप में हुई और यह हत्या उसके ही कुलीन वर्ग के एक सदस्य महमूद खलजी द्वारा की गई। इस तरह से गौरी शासन का स्वयं ही अंत हो गया।

महमूद खलजी की स्वयं की स्थिति को पुराने गौरी अमीरों द्वारा चुनौती दी गई। महमूद खलजी ने प्रारंभ में तुष्टीकरण की नीति का अनुसरण किया और उनको जागीरें तथा उच्च पद प्रदान किये, लेकिन वे उनका समर्थन प्राप्त न कर सका। उसको उच्च कुलीनों द्वारा किए गए अनेक विद्रोहों का सामना करना पड़ा। अंत में, उसने इन विद्रोही कुलीनों की समस्या का सफलतापूर्वक हल कर लिया। अपनी आंतरिक स्थिति को सुदृढ़ करने के बाद महमूद खलजी को अपने राज्य के प्रसार करने का समय प्राप्त हो गया।

मेवाड़ ऐसा राज्य था, जिसने उसको सबसे अधिक आकर्षित किया। आप इकाई 24 में पढ़ेंगे कि राणा कुम्भा के अधीन मेवाड़ ने अपने सीमावर्ती राजपूत राज्यों को अपने अधीन करने और मेवाड़ के साथ मिलाने की नीति का अनुसरण किया। इससे मालवा के लिए प्रत्यक्ष तौर पर खतरा पैदा हो गया। सन् 1437 के प्रारंभ में महमूद खलजी को शक्तिशाली राणा का सामना करना पड़ा। राणा कुम्भा ने होशंग शाह के पुत्र उमर खां से वायदा किया कि वह महमूद खलजी के स्थान पर मालवा की गद्दी पर उसको बैठाएगा। सारंगपुर की लड़ाई (1437 ई.) में महमूद खलजी को पराजित कर दिया गया और उसको गिरफ्तार कर लिया गया। बाद में, महमूद खलजी ने रणमल की मृत्यु के बाद मेवाड़ में फैली अराजकता का लाभ उठाते हुए, 1442 ई. में मेवाड़ पर आक्रमण कर दिया। उसने बनमाता के मंदिर को नष्ट कर दिया और बिना कुछ विशेष प्राप्ति के वह वापस लौट गया। तब से महमूद खलजी ने राणा कुम्भा के विरुद्ध हर वर्ष आक्रमण किए। यद्यपि महमूद खलजी ने गगरौन पर 1444 ई. में तथा मण्डलगढ़ पर 1457 ई. में अधिकार कर लिया था, लेकिन राणा कुम्भा अपने क्षेत्र की एकता बनाए रखने तथा उसकी ठीक प्रकार से सुरक्षा करने में सफल रहा। लेकिन यह संघर्ष बिना किसी कमी के अनवरत चलता रहा। मालवा एवं जौनपुर के बीच संघर्ष का मुख्य कारण कालपी था। होशंग शाह अपने भतीजे जलाल खां को कालपी की सत्ता प्राप्त कराने में पहले मदद दे चुका था। लेकिन जलाल खां की मृत्यु के बाद (1442) नसीर खान जहां कालपी का शासक बना। परन्तु महमूद शर्की ने उसको बाहर निकाल दिया। इसके कारण जौनपुर का कालपी पर नियंत्रण बढ़ने लगा। महमूद खलजी ने इसको पसंद नहीं किया। इसका परिणाम 1444 ई. में दोनों के बीच संघर्ष के रूप में हुआ। अंततः एक संधि पर हस्ताक्षर किए गए। महमूद शर्की कालपी को खान जहां को देने को तैयार हो गया और इसके कारण जौनपुर तथा मालवा के बीच मधुर संबंध कायम हो गए।

गुजरात ऐसी दूसरी अन्य शक्ति थी जिसका सामना मालवा को करना पड़ा। आप इकाई 24 में पढ़ेंगे कि मुजफ्फर गुजराती ने एक बार होशंग शाह को कैद करने में सफलता प्राप्त की थी।
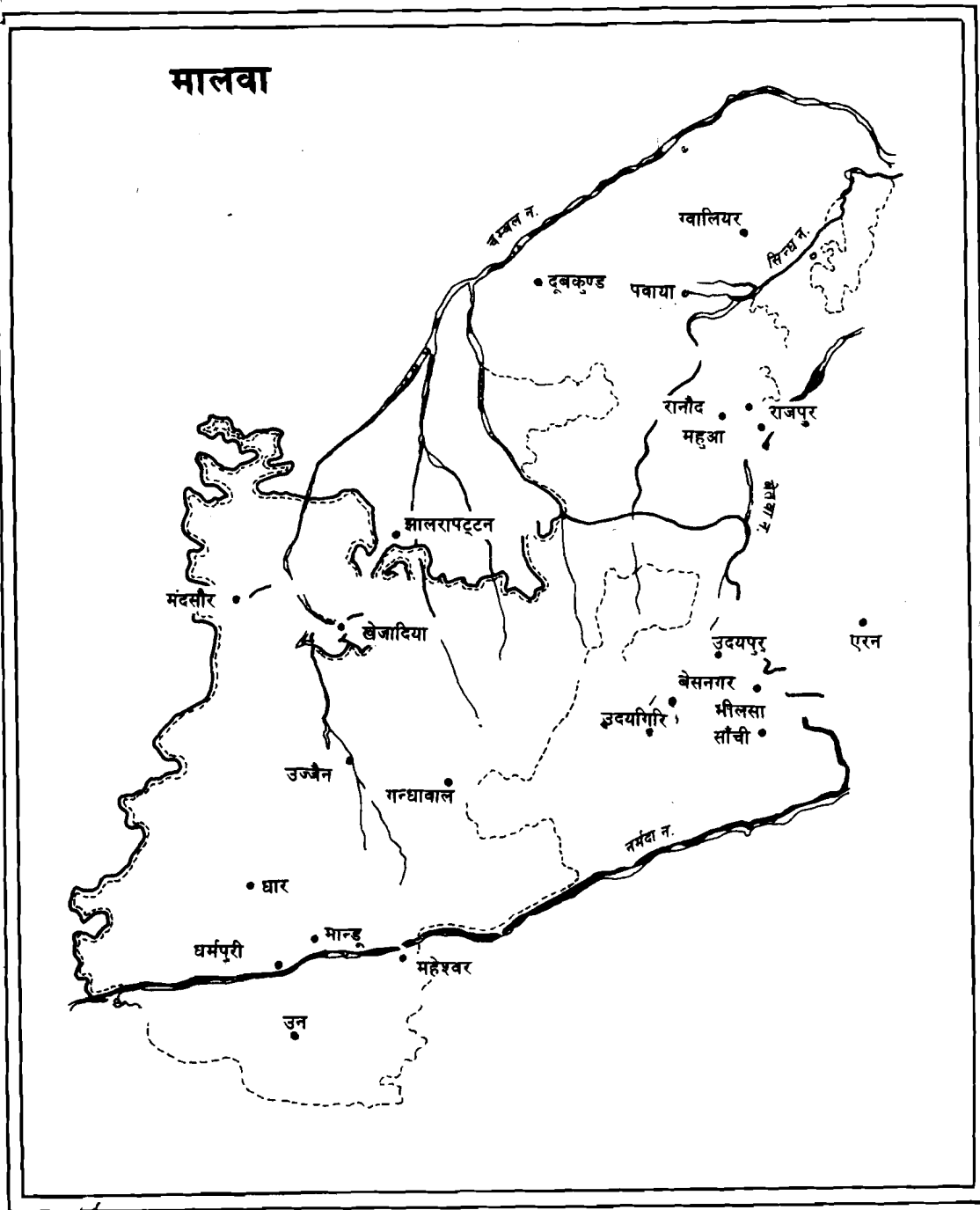
1442 में अहमद शाह की मृत्यु के बाद, मौहम्मद शाह गुजराती की स्थिति कमज़ोर हो जाने पर महमूद खलजी को सुल्तानपुर तथा नन्दूरबार पर 1451 ई. में अधिकार करने का अवसर प्राप्त हो गया। जिस समय महमूद खलजी मौहम्मद गुजराती के विरुद्ध अभियान पर था ठीक उसी समय मौहम्मद गुजराती की मृत्यु हो गई। उसके उत्तराधिकारी सुल्तान कुतबुद्दीन ने महमूद खलजी के साथ संधि कर ली। दोनों पक्ष एक दूसरे की प्रादेशिक सीमाओं का सम्मान करने के लिए सहमत हो गए। दोनों इस बात के लिए भी सहमत हुए कि वे मेवाड़ में अपनी-अपनी स्वतंत्र नीति का अनुसरण करेंगे। परन्तु अन्य क्षेत्रों के लिए दोनों के मध्य इस तरह का समझौता न हो सका। महमूद खलजी ने बहमनी राजनीति में जो हस्तक्षेप किया, महमूद बेगड़ा उससे कठोरता से निपटा (और जानकारी के लिए देखें इकाई 28)।

महमूद खलजी के पुत्र एवं उत्तराधिकारी गियास शाह (1469-1500 ई.) ने विजयों की अपेक्षा सुदृढ़ीकरण की ओर अधिक ध्यान दिया। मेवाड़ के राणा के साथ संक्षिप्त संघर्ष के अलावा (1473 ई. में यह संघर्ष हुआ) गियास शाह का शासन काल अपनी इस नीति के फलस्वरूप अंत तक शांतिमय रहा।

23.3 जौनपुर

अफीफ हमें सूचित करता है कि गोमती नदी के किनारे जौनपुर नगर की स्थापना फिरोज़ शाह तुगलक द्वारा 1359-60 ई. में उस समय की गई थी, जबकि वह अपने दूसरे बंगाल अभियान पर था। यह शहर सत्ता का एक मज़बूत केन्द्र हो गया और शीघ्र ही इसका विकास दिल्ली के एक विरोधी नगर के रूप में हुआ।

फिरोज़ शाह तुगलक के एक अमीर मलिक सरवर ने फिरोज़ के पुत्रों के बीच उत्तराधिकार के लिए हुए संघर्ष का भरपूर लाभ उठाया और सुल्तान मौहम्मद शाह के अधीन वह वजीर के पद तक पहुंच गया। मलिक सरवर ने **सुल्तान-उस शर्क** की उपाधि के साथ-साथ पूर्वी ज़िलों का नियंत्रण प्राप्त कर लिया। तैमूर के आक्रमण के कारण दिल्ली का राज्य बिखर गया। सरवर ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए स्वयं को जौनपुर का स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया। उसने अपने राज्य की सीमाओं को कोल (अलीगढ़), सम्भल तथा मैनपुरी में स्थित रापरी तक प्रसारित कर दिया। उसकी उच्च अभिलाषाओं के कारण जौनपुर का दिल्ली, बंगाल, उड़ीसा तथा मालवा के साथ कड़ा सैन्य संघर्ष हुआ। यद्यपि इन संघर्षों में उसे सफलता प्राप्त न हुई, लेकिन उसने जाजनगर तथा ग्वालियर के शासकों को अपने अधीन कर लिया। उसके उत्तराधिकारी एवं पुत्र मुबारक शाह शर्की (1399-1401) को अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने का शायद समय प्राप्त नहीं हो सका। लेकिन छोटे भाई एवं उत्तराधिकारी इब्राहिम शाह शर्की (1401-1440) ने प्रभावशाली ढंग से अपने राज्य का प्रसार किया। इस संबंध में उसकी सबसे महत्वपूर्ण विजय कन्नौज (1406) की थी। इस समय कन्नौज मौहम्मद शाह तुगलक के अधीन था। इससे उसके सम्मान में बहुत अधिक वृद्धि हुई और उसकी आगामी उपलब्धियों के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ। 1407 ई. में उसने दिल्ली पर अधिकार करने की इच्छा से आक्रमण किया, लेकिन प्रारंभिक सफलताओं के बावजूद उसका यह प्रयास असफल रहा। यद्यपि उसने कालपी (1414) पर भी अपना प्रभाव स्थापित कर लिया था, लेकिन कालपी का शासक कादिर खां उसके लिए समस्याएं पैदा करता रहा। सन् 1414 ई. में इब्राहीम ने बंगाल के शासक गणेश को भी पराजित किया। अपने शासन के अंतिम वर्षों में उसने पुनः सन् 1437 ई. में दिल्ली पर आक्रमण किया और उसके आसपास के कुछ परगनों पर अधिकार कर लिया। सुल्तान मौहम्मद शाह तुगलक ने अंततः उससे समझौता कर लिया। सुल्तान अपनी पुत्री बीबी हाजी का विवाह इब्राहिम के पुत्र महमूद खां से करने के लिए सहमत हुआ। इब्राहिम की शक्तिशाली सफलताओं ने जौनपुर राज्य की प्रतिष्ठा की वृद्धि की। इब्राहिम को **शीराज़-ए हिन्द** की उपाधि प्राप्त हुई।

इब्राहिम के उत्तराधिकारियों महमूद शर्की (1440-54), मौहम्मद शर्की (1457-58) तथा हुसैन शर्की (1458-1505) के शासनकाल में दिल्ली सुल्तानों के साथ लगातार संघर्ष होते रहे। अंततः बहलोल लोदी ने 1483-84 ई. में जौनपुर पर अधिकार कर लिया और इसे मुबारक नोहानी के अधीन कर दिया गया। हुसैन शाह ने इसको पुनः प्राप्त करने के लिए अंतिम प्रयास किए, किन्तु वह असफल हुआ। अंततः बहलोल ने अपने पुत्र बरबक शाह को जौनपुर के सिंहासन पर बैठा दिया और इस तरह से शर्की शासकों के काल का अंत हो गया।

बोध प्रश्न 1

1) होशंग शाह की प्रमुख उपलब्धियाँ बताइए।

....

....

....

....

....

2) लोदी-शर्की संघर्ष ने अंततः शर्की राज्य के भाग्य का सूर्यास्त कर दिया। उपरोक्त कथन की रोशनी में शर्की शासकों के पतन की विवेचना लगभग पाँच पंक्तियों में कीजिए।

....

....

....

....

....

3) निम्नलिखित कथनों में कौन-सा सही है और कौन-सा गलत। सही (✓) तथा गलत (×) के चिन्ह लगाइए :
   i) दिलावर खां तुगलकों का गवर्नर था।
   ii) गगरौन मालवा तथा शर्की शासकों के बीच एक मध्यवर्ती राज्य था।
   iii) महमूद खलजी के साथ संघर्ष में राणा कुम्भा उमर खां के साथ था।
   iv) इब्राहिम शर्की ने **शीराज़-ए हिन्द** की उपाधि प्राप्त की।

23.4 बंगाल

बंगाल दिल्ली से काफी दूरी पर स्थित था और अपनी भौगोलिक-राजनीतिक परिस्थितियों के कारण इस पर दिल्ली के सुल्तानों को अपना कड़ा नियंत्रण रख पाना काफी मुश्किल था। राज्य के गवर्नरों ने इस दूरी का पूरा-पूरा लाभ उठाया। जैसे ही केन्द्रीय सत्ता कमज़ोर होती या शासकगण किसी अन्यत्र स्थान पर व्यस्त होते तब इस क्षेत्र के कुलीन वर्ग के लोग अर्ध-स्वतंत्र शासकों के रूप में कार्य करने लगते।

पहले भी सन् 1225 ई. में इल्तुतमिश ने स्वयं अपनी सत्ता को स्थापित करने के लिए बंगाल के विरुद्ध सैनिक अभियान का संचालन किया था और बलबन को बंगाल के गवर्नर तुगरिल बेग के विद्रोह को कुचलने में लगभग तीन वर्ष का समय लगा। बंगाल पर दिल्ली सल्तनत के प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए बलबन ने अपने पुत्र बुगरा खां को सन् 1281 ई. में बंगाल का गवर्नर नियुक्त किया। बुगरा खां ने बलबन की मृत्यु के पश्चात् (1287) स्वयं को दिल्ली सल्तनत के सिंहासन का दावेदार प्रस्तुत करने के स्थान पर बंगाल का शासक बने रहने का निर्णय किया। बाद में, हमें यह वृतांत मिलता है कि सन् 1301 ई. में गियासुद्दीन तुगलक ने लखनौती की ओर सैनिक अभियान के लिये प्रस्थान किया। लेकिन मौहम्मद तुगलक के समय में बंगाल के प्रति अधिक प्रभावशाली नीति का अनुसरण किया गया। मौहम्मद तुगलक ने अपने वफादार समर्थकों को लखनौती, सोनारगांव एवं सतगांव का गवर्नर नियुक्त किया। इससे शक्तिशाली गुटों के मध्य संतुलन स्थापित करने में सफलता प्राप्त हुई। इसके कारणवश स्थानीय प्रभावशाली तत्वों की शक्ति को कम करने में मदद मिली और दिल्ली के नियंत्रण में वृद्धि हुई। फिर भी, समय-समय पर बंगाल की ओर से दिल्ली के प्रभुत्व को चुनौती मिलती रही।

इलियास शाह (1342-57) बंगाल का शक्तिशाली शासक बन गया। उसने लखनौती और सोनारगांव पर अधिकार कर लिया और इसी के साथ-साथ उसने बनारस की ओर कूच किया। सुल्तान फिरोज़ तुगलक ने स्वयं बंगाल की ओर सैनिक अभियान के लिये प्रस्थान किया और इस समस्या का निदान करने में उसे लगभग एक वर्ष (1353-54) का समय लगा। एक बार फिर सन् 1359 में सुल्तान फिरोज़ तुगलक को सिकन्दर शाह की (1357-89) शक्ति को दबाने के लिए उसके विरुद्ध सैनिक अभियान पर जाना पड़ा। फिरोज़ तुगलक की मृत्यु (सन् 1388 ई.) के बाद दिल्ली के सुल्तान इतने कमज़ोर हो गए कि वे बंगाल के अड़ियल शासकों को अपने अधीन न रखे सके।

सिकन्दर शाह का पुत्र गियासुद्दीन आज़म शाह (1389-1409) एक लोकप्रिय शासक था। उसे कमाटा तथा अहोम के राजाओं के संयुक्त आक्रमण का सामना करना पड़ा और करातोया नदी के पार के क्षेत्र को देना पड़ा। 1406 ई. में चीनी शासकों के दूतों के आने से चीन के साथ कूटनीतिक संबंध स्थापित हुए।

1409 में गियासुद्दीन शाह की हत्या के बाद बंगाल को आंतरिक अराजकता तथा संघर्षों के दोहरे संकट का सामना करना पड़ा (1409-1418 और 1435-42) लेकिन इलियास शाह के एक वंशज नसीरुद्दीन अबुल मुजफ्फर महमूद के सत्ता में आ जाने के साथ सभी मामले उचित स्थिति में आ गए। उसके पुत्र रुक्नुद्दीन बरबक (1459-74) ने प्रसारवादी नीति का अनुसरण किया। इसके फलस्वरूप उसकी सीमाएं गंगा के उत्तर में बरनर तक तथा दक्षिण में
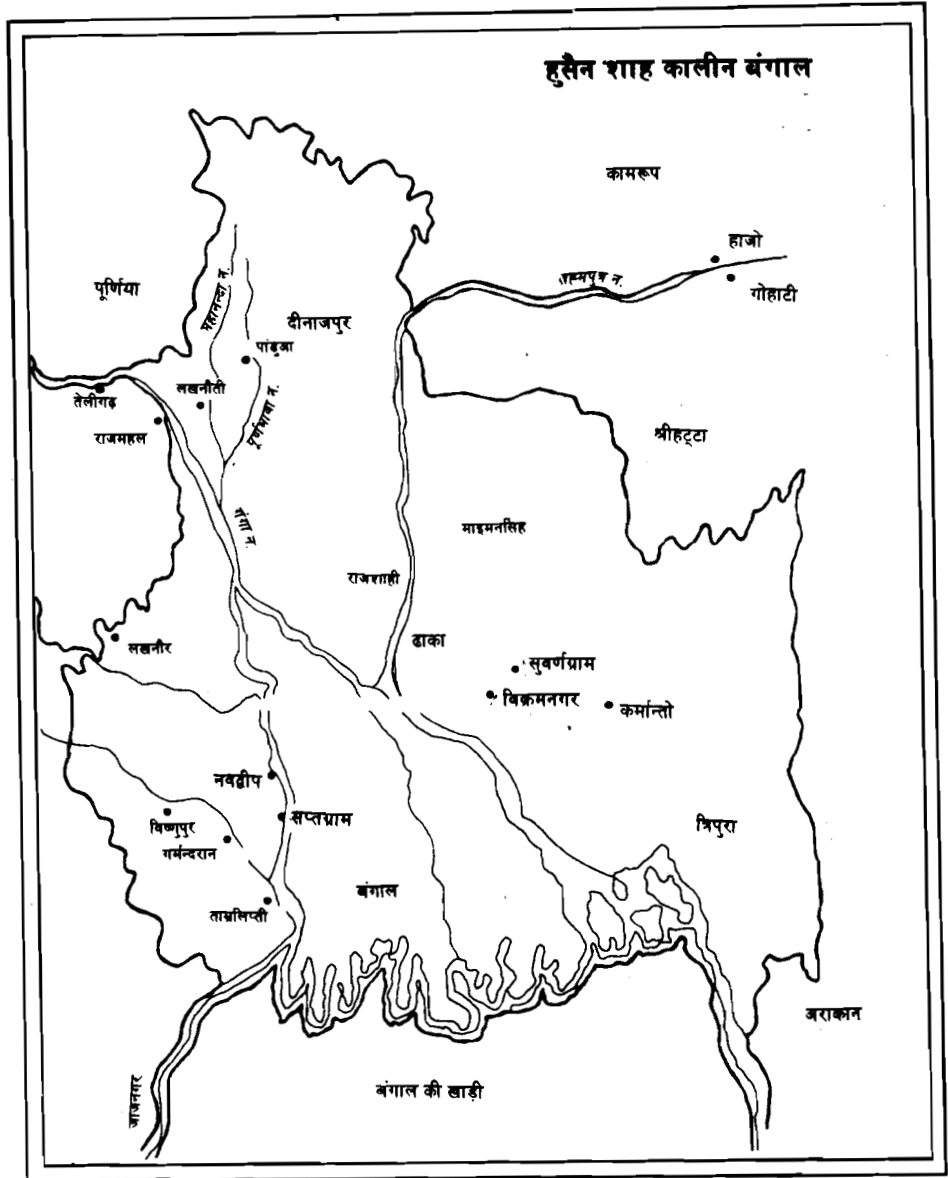
जैस्सोर-खुलना तक फैल गईं। प्रसार के कार्य में अबीसीनिया के गुलाम सैनिकों ने निर्णायक भूमिका अदा की, लेकिन बरबक के द्वारा उनको संरक्षण दिए जाने की नीति घातक सिद्ध हुई। 1794 में अबीसीनिया के सेनापति सैफुद्दीन फिरोज़ ने बंगाल की सत्ता पर अधिकार कर लिया। लेकिन वह अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने में असफल रहा और सन् 1493 ई. में अलाउद्दीन हुसैन शाह (1493-1519) ने सत्ता पर अधिकार कर लिया। उसने न केवल अबीसीनिया के गुलामों पर नियंत्रण स्थापित करने में सफलता प्राप्त की अपितु एक गहन प्रसारवादी नीति का अनुसरण किया। उसके शासन काल में बंगाल की सीमाएं उत्तर-पश्चिम में, बिहार में स्थित सरन तक, दक्षिण-पूर्व में सिलहट तथा चटगांव तक, उत्तर-पूर्व में हाजो और दक्षिण-पश्चिम में मन्दरान तक फैल गईं। सन् 1495 ई. में उसे सुल्तान सिकन्दर लोदी के शक्तिशाली आक्रमण का सामना करना पड़ा क्योंकि हुसैन शाह ने जौनपुर के शासक को शरण दी थी। बाद में आक्रमण न करने की संधि पर हस्ताक्षर किए गए और हुसैन शाह ने इस तरह के भगोड़ों को शरण न देने का वचन दिया।

बोध प्रश्न 2

1) भौगोलिक-राजनीतिक परिस्थितियों ने बंगाल को अपनी स्वतंत्रता बनाए रखने में कैसे मदद की?

....

....

....

....

....

2) बंगाल की 15वीं सदी के अंत की राजनीति में अबीसीनियाई कुलीनों की क्या भूमिका थी?

....

....

....

3) तिथिक्रमानुसार व्यवस्थित कीजिए :

i) बख्तियार खलजी	1281 ई.
ii) बुगरा खां	1459-74
iii) इलियास शाह	1357-89
iv) रुक्नुद्दीन बरबक	1205
v) सिकन्दर शाह	1342

23.5 आसाम

भौगोलिक तौर पर मध्यकालीन आसाम के अंतर्गत पश्चिम में करातोया नदी की घाटी के साथ-साथ संपूर्ण ब्रह्मपुत्र की घाटी तथा उत्तर-पूर्व में मिश्मी पहाड़ियों एवं पटकाय बूम का संपूर्ण इलाका आता था। इसके पूर्व की ओर बर्मा राज्य की सीमा समांतर जाती थी। 13वीं सदी ई. से 15वीं सदी ई. तक आसाम के अंदर चूटिया, अहोम (या ताय अहोम), कोच, दिमासा, त्रिपुरी, मणिपुरी, खासी एवं जैनतिया जैसी कबीलाई राजनीतिक प्रणालियां विद्यमान थीं। अंततः चूटिया और अहोम कबीलों का शक्तिशाली कबीलों के रूप में उदय हुआ। इनके अतिरिक्त आसाम में कमाटा (कामरूप) राज्य भी विद्यमान था।

23.5.1 कमाटा-कामरूप

मध्यकालीन कमाटा राज्य में ब्रह्मपुत्र घाटी सहित (रंगपुर को छोड़कर), भूटान, कूच बिहार, मैमनसिंह तथा गारो पहाड़ियों के क्षेत्र शामिल थे। राय सन्ध्या के काल (1250-70) तक कामरूप (आधुनिक उत्तरी गोहाटी) कमाटा राज्य की राजधानी था। लेकिन कचारी राज्य के प्रसार ने राय सन्ध्या को अपनी राजधानी को कामरूप से कमाटापुर (आधुनिक कूच बिहार ज़िले में) ले जाने के लिए बाध्य किया और तभी से इसको कामरूप-कमाटा राज्य कहा जाने लगा।

हम पहले ही पढ़ चुके हैं कि मौहम्मद गौरी के एक सेनापति बख्तियार खलजी ने 1206 ई. में कामरूप पर आक्रमण किया। लेकिन उसके लिए यह अभियान एक त्रासदी साबित हुआ। उसकी सेना पूर्णरूपेण नष्ट हो गई। 1227 ई. में सुल्तान गियासुद्दीन इवाज़ ने भी कामरूप पर अधिकार करने का प्रयास किया और उसका भी राय पृथु के हाथों वही हश्र हुआ जो बख्तियार खलजी का हुआ था। बाद में इल्तुतमिश के पुत्र नसीरुद्दीन महमूद ने राय पृथु की शक्ति को कुचलने में सफलता प्राप्त की। 1225 में मलिक यूज़बेक ने कामरूप पर आक्रमण किया और बाद में उसका भी वही हाल हुआ जो बख्तियार खलजी का हुआ था। उसकी सेनाएं शीघ्र ही शक्ति-विहीन हो गईं, मलिक यूज़बेक गंभीर रूप से घायल हो गया और 1227 में उसकी मृत्यु हो गई। सिंहध्वज के शासन काल (1300-1305) में बंगाल के सुल्तान शमसुद्दीन फिरोज़ शाह (1301-22) ने 1303 में ब्रह्मपुत्र को पार करते हुए मैमनसिंह एवं सिलहट पर अधिकार कर लिया।

कामरूप राज्य सदैव अहोम साम्राज्यवादी योजनाओं का शिकार होता रहा। **बुरंजी** साहित्य में कमाटा के शासक सिंधु राय (1260-1285) के विरुद्ध अहोम राजा सुकाफा (1228-1268) की सफलता का वर्णन मिलता है। सिंधु राय ने सुकाफा की अधीनस्थता को स्वीकार कर लिया, लेकिन उसके उत्तराधिकारी प्रताप ध्वज (1300-05) ने अहोम शासकों को नज़राना देना बंद कर दिया जिसके फलस्वरूप सुखांगफा (1293-1332) ने फिर कमाटा राज्य पर आक्रमण किया। एक लंबी लड़ाई तथा भारी नुकसान के बाद अंततः प्रताप ध्वज ने शांति के लिए सुलह की और सुखांगफा के साथ अपनी पुत्री रजनी का विवाह कर दिया।

14वीं सदी के कमाटा राज्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता उन भुयान सरदारों का महान विद्रोह था, जिन्होंने अस्थिर परिस्थितियों का लाभ उठाया। धर्म नारायण तथा दुर्लभ नारायण के बीच उत्तराधिकार के लिए युद्ध हुआ। प्रारंभ में भुयान सरदारों का विद्रोह असफल रहा, क्योंकि दुर्लभ नारायण (1330-50) तथा अरिमत्ता (1365-85) की शक्ति इनसे कहीं अधिक थी। लेकिन अरिमत्ता की मृत्यु (1385) के बाद उसके उत्तराधिकारी भुयान सरदारों के प्रहारों का सामना कर सकने में बड़े कमज़ोर साबित हुए और 15वीं शताब्दी के मध्य में राय पृथु के वंश को भुयान सरदारों के ख्यान वंश द्वारा उखाड़ दिया गया और नीलध्वज (1440-1460) ने इस नए वंश की स्थापना की। नीलाम्बर (1480-1498) ख्यान वंश का सबसे शक्तिशाली शासक हुआ और उसने अपने राज्य की सीमाओं को करातोया से बारनदी तक बढ़ा दिया। अबीसीनियाई गुलामों ने बंगाल (गौड़) में अराजकता की जो स्थिति पैदा की, नीलाम्बर ने उसका लाभ उठाते हुए, बंगाल के उत्तर-पूर्वी भाग पर अधिकार करने में सफलता प्राप्त की। बाद में, अलाउद्दीन हुसैन शाह (1493-1519) ने नीलाम्बर की शक्ति को कुचल दिया और इसी के साथ ख्यान वंश के शासन का अंत हो गया।

23.5.2 अहोम

अहोमों का संबंध दक्षिण-पूर्वी एशिया के ताय कबीले की उपशाखा माओ-शान से था। सन् 1208 ई. में अहोम ऊपरी बर्मा में स्थित मोगौंग नामक प्रदेश तथा युनान को छोड़कर 1223 ई. में ऊपरी असम दिखोऊ घाटी (आधुनिक सिबसागर मण्डल) में अंतिम तौर पर बस गए। उन्होंने चरायदेव (बाद में, 1397 ई. में चारगुआ को राजधानी बनाया) को अपने राज्य की राजधानी बनाया। माओ-शान कबीले का सुकाफा प्रथम अहोम राजा (1228-68) था और उसने चुटियों, मोरान, बोरहियों, नागों, कचारियों तथा कमाटा (कामरूप) को अपने अधीन करा लिया। उसके पुत्र सुत्यूफा (1268-1281) ने कचारियों को पराजित कर अपने प्रभुत्व क्षेत्र को दक्षिण की ओर ब्रह्मपुत्र के किनारे कालंग (आधुनिक उत्तरी कछार उपमंडल) तक बढ़ा दिया। सुखांगफा (1293-1332) के अधीन अहोम शासक संपूर्ण ब्रह्मपुत्र घाटी की सर्वोच्च शक्ति बन गए। सुखांगफा की मृत्यु के बाद एक रिक्तता पैदा हो गई थी और इसके फलस्वरूप अहोम राज्य तीन बार राजा के बिना (सन् 1364-69, 1376-1380 ई. तथा 1389-1397 ई.) रहा। किसी तरह से सुदंगफा के शासन काल में (1397-1407) स्थिति में स्थायित्व पैदा हो गया। इसके शासन काल में नारा तथा कमाटा के शासकों के साथ संघर्ष हुए। इसके फलस्वरूप अहोम राज्य की सीमाएं उत्तर में पटकाय तथा उत्तर-पूर्व में करातोया नदी तक पहुंच गईं। सुदंगफा के शासन काल में स्थापित सीमाएं संपूर्ण 15वीं सदी में बनी रहीं। बाद में सुहेनफा (1488-93) को नाग तथा कचारियों के विद्रोहों का सामना करना पड़ा। लेकिन इन विद्रोहों का दमन कर दिया गया। 15वीं सदी ई. के अंतिम वर्षों में सुपिम्फा के (1493-97) बुरागोहिन, खेनपुंग जैसे कुलीनों ने विद्रोह कर दिया। यद्यपि विद्रोह का दमन कर दिया गया, लेकिन इसने कुलीनों के बीच होने वाले आतंरिक कलहों को स्पष्ट कर दिया जिसका प्रारंभ 15वीं सदी के अंतिम वर्षों में हो चुका था।

23.6 उड़ीसा

तुर्कों के आक्रमण के समय उड़ीसा पूर्वी गंगा शासकों के अधीन था। **तबकात-ए-नासिरी** के वृतांत के अनुसार बख्तियार खलजी ने मौहम्मद तथा अहमद भाइयों को जाजनगर (आधुनिक उड़ीसा) पर ठीक अपनी मृत्यु से पूर्व (1205) आक्रमण करने के लिए भेजा। इस समय जाजनगर का शासक राजराजा III (1197-1211) था। अगला आक्रमण गियासुद्दीन इवाज़ के नेतृत्व में अनंगभीम III के सत्तासीन (1211-38) होने के तुरन्त बाद हुआ। यद्यपि **तबकात-ए नासिरी** में इवाज़ की सफलता की प्रशंसा की गई है, लेकिन चाटेश्वर अभिलेख

के अनुसार इस संघर्ष में अनंगभीम III की विजय हुई। ऐसा प्रतीत होता है कि इवाज़ के आक्रमण को रोक दिया गया था।

नरसिंहम I (1238-64) को इख्तियारुद्दीन यूजबेक के आक्रमण का सामना करना पड़ा और यूजबेक को अपने प्रथम दो आक्रमणों में सफलता भी प्राप्त हुई। लेकिन बाद में नरसिंहम I ने उसके प्रयासों को विफल कर दिया। नरसिंहम I ने अपने राज्य की सीमाओं को मिदनापुर, हावड़ा तथा हुगली तक फैला दिया। 13वीं सदी के समापन पर (1296) सतगांव दिल्ली सुल्तानों के अधीन हो गया। आप खंड 4 में पढ़ चुके हैं कि गियासुद्दीन तुगलक (1320-25) के शासन काल में तथा उलुग खां (बाद में मौहम्मद तुगलक) ने किस तरह से जाजनगर पर अधिकार कर लिया और यहाँ के शासक उनके सामन्त हो गए।

भानूदेव III (1352-78 ई.) के शासन काल से ही गंगा के इस राज्य की शक्ति कमज़ोर होने लगी और इस अवसर का लाभ उठाते हुए, पड़ोसी राज्यों ने आक्रमण शुरू कर दिये।

सन् 1353 ई. में बंगाल के शासक शमसुद्दीन इलियास ने चिल्का झील को पार करते हुए जाजनगर के शासक को पराजित किया और वह विशाल लूट की दौलत के साथ अनेक हाथी भी ले गया। बाद में, दिल्ली, विजयनगर, जौनपुर तथा बहमनी शासकों ने भी उड़ीसा में यदा-कदा लूटपाट की।

इस तरह की अव्यवस्था तथा अनिश्चय की स्थिति में भानूदेव IV (1414-1435 ई.) के मंत्री कपिलेन्द्र ने 1435 ई. में उड़ीसा के सिंहासन पर अधिकार कर उड़ीसा में गजपति शासन की नींव डाली। 1464-65 ई. तक उसके राज्य की सीमाएं दक्षिण अरकाट ज़िले तथा दक्खन के पूर्वी पठार तक फैल गईं। कपिलेन्द्र ने हुमायूँ बहमनी को उस समय अपमानजनक ढंग से पराजित किया, जिस समय हुमायूँ ने देवारकोन्डा पर आक्रमण किया और कपिलेन्द्र देवारकोन्डा के सरदार की मदद के लिए आया। इसके बाद कपिलेन्द्र जब तक जीवित रहा तब तक बहमनी शासकों ने तेलंगाना पर आक्रमण करने का साहस नहीं किया। 1450 ई. में कपिलेन्द्र ने बंगाल के शासक नसीरूद्दीन (1442-59) को पराजित कर दिया और **गौडेश्वर** की उपाधि को धारण किया। सन् 1453 में राजामुन्द्री भी उसके राज्य का एक भाग बन गया। 1462 तक उसके राज्य की सीमाएं हुगली से दक्षिण में कावेरी नदी तक फैल गईं लेकिन उसके शासन काल के अंतिम वर्षों में विजयनगर के शासक सलूवा नरसिंह ने कावेरी नदी के थाल से उड़ीसा के लोगों को निष्कासित कर दिया। पुरुषोत्तम ने 1467 ई. में सिंहासन प्राप्त करने के बाद तमिल क्षेत्रों पर आक्रमण किया, लेकिन उसके शोषण का प्रभाव क्षेत्र केवल कांची तक सीमित रहा। इसी के साथ-साथ पुरुषोत्तम को बहमनी शासक मौहम्मद शाह III (1463-1482 ई.) को कोन्डनीर (कोण्डाविडू) तथा राजामुन्द्री देना पड़ा। सलूवा नरसिंह ने (बाद में विजयनगर शासक) स्थिति का लाभ उठाते हुए उदयगिरि (1476) पर अधिकार कर लिया। जब तक मौहम्मद शाह III जीवित था, पुरुषोत्तम ने इन क्षेत्रों पर अधिकार करने का प्रयास नहीं किया। 1482 ई. में उसकी मृत्यु के बाद पुरुषोत्तम ने राजामुन्द्री, कोण्डनीर तथा उदयगिरि को लगभग 1484 ई. में सलूवा नरसिंह से छीन लिया। इस तरह से उसने अपने राज्य की सीमाओं को उत्तर में भगीरथी से दक्षिण में पैन्नार नदी तक बढ़ा लिया। अपने पिता की भांति, उसके पुत्र प्रताप रूद्र (1497-1540 ई.) ने, प्रसारवादी नीति का अनुसरण किया। उसके अधिकतर सैनिक अभियान 16वीं सदी ई. के प्रारंभ में हुए और ये हमारे अध्ययन क्षेत्र से बाहर हैं। उसने अपने शासन का अधिकतर समय विजयनगर के शासक कृष्णदेव राय तथा बंगाल के शासक हुसैन शाह के साथ संघर्ष करने में बिताया। 1540 ई. में उसकी मृत्यु हो गई और उसकी मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी राज्य की एकता को कायम न रख सके और शीघ्र ही सूर्यवंशी (गजपति) शासन का अंत (1542) हो गया।

बोध प्रश्न 3

1) कामरूप राज्य के साथ बंगाल के शासकों के संबंधों की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

2) ताय-अहोम कौन थे? सुखांगफा की उपलब्धियों को बताइए।

....

....

....

3) विजयनगर, बहमनी तथा बंगाल के शासकों के साथ कपिलेन्द्र के संबंधों का विवेचन कीजिए।

....

....

....

4) रिक्त स्थानों को भरिए :
   i) कमाटा .... की राजधाना था।
   ii) राय पृथु ने .... और ....
   की शक्तियों को पराजित किया।
   iii) असमिया साहित्य को .... कहा जाता है।
   iv) अहोम .... कबीले से संबंधित थे।
   v) ख्यान वंश की नींव .... के द्वारा रखी गई।
   vi) पुरुषोत्तम ने कोन्डाविडू तथा राजामुन्द्री ....
   को दे दिया।

23.7 सारांश

इस इकाई में आपने मालवा, जौनपुर तथा बंगाल के स्वतन्त्र राज्यों के उदय का अध्ययन किया है। इन राज्यों का उदय दिल्ली सल्तनत के कमज़ोर हो जाने के परिणामस्वरूप हुआ था। हमने इन इकाईयों में दिल्ली सल्तनत तथा पड़ोसी राज्यों के साथ इन राज्यों के संबंधों का भी विवचेन किया है। इन राज्यों के अतिरिक्त हमने असम एवं उड़ीसा के राज्यों का भी उल्लेख किया है। इन दोनों राज्यों का विकास दिल्ली सल्तनत से स्वतन्त्र तौर पर हुआ। असम में कमाटा-कामरूप तथा अहोम नाम के दो राज्य विद्यमान थे। अहोम राज्य अभी भी राज्य निर्माण की प्रक्रिया में था और यह मुख्यतः कबीलाई संगठन पर आधारित था।

23.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें भाग 23.2
2) देखें भाग 23.3
3) देखें भाग 23.2, 23.3

बोध प्रश्न 2

1) देखें भाग 23.4
2) देखें भाग 23.4
3) (i) 1205 (ii) 1281 (iii) 1342 (iv) 1459-74 (v) 1357-89

बोध प्रश्न 3

1) देखें उपभाग 23.5.1
2) देखें उपभाग 23.5.2
3) देखें भाग 23.6
4) इन प्रश्नों के उत्तर के लिये देखें उपभाग 23.5.1 तथा भाग 23.6.